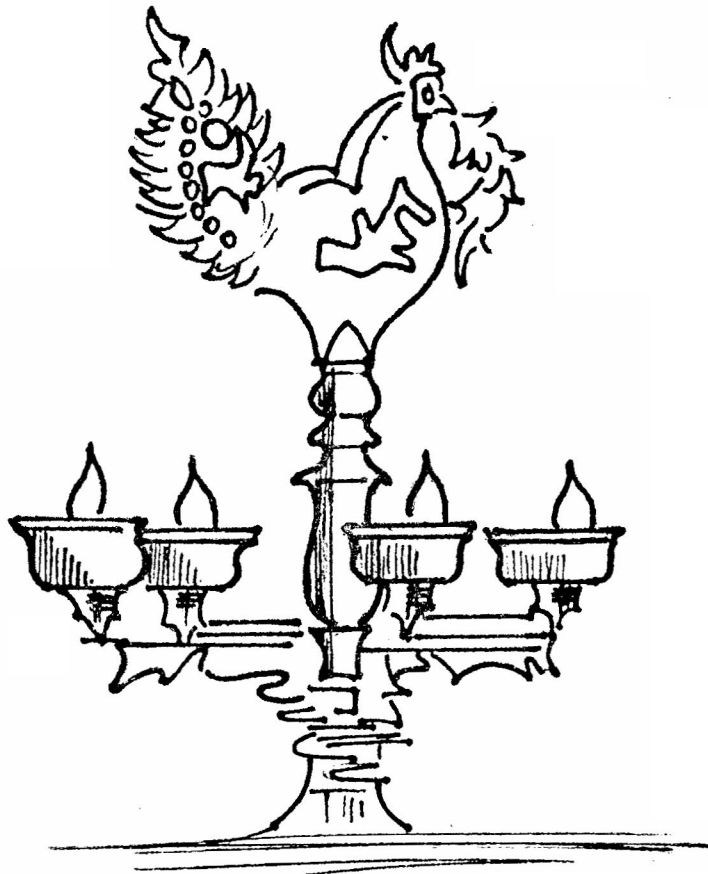


CHATHURABHARATI



1974 — 1975

STELLA MARIS COLLEGE

॥ पथ भ्रष्ट ॥

मधुशाला से मैं आया हूँ, पर जाऊँ अब कहाँ ?
नहीं मालूम कहाँ जा रहा हूँ, पर जाऊँ मैं पैर ले जहाँ ॥
शोणितपिथा शराब पी, जानूँ मैं नहीं वह क्या
पर थी वह रुधिर रंग की, कहते हैं मुझे लगा है नशा ॥
हँसता हूँ, कहते हैं दीवाना रोताहूँ कहते हैं मतवाला
और लगा जब मैं माँगने खाना, कहते हैं तू हो यहाँ से रवाना ॥
यार भक्ति तेरी संतोषदायिनी, पर मधु है मेरी हृदय हारिणी
तू क्या जाने मेरा रिक्त हस्त, तेरा जीवन् है अपार मस्त ॥
कर्ता-धर्ता-भर्ता-हर्ता मेरी, है यह शीशी भरी शराब की
अकिंचनता की कसक को दूर कर देती है वह ॥
क्या हो सकती है इससे सुगम भुला देती हर व्यक्ति का गम
निधन की डगर न दीखती मुझे, ले चल पैर मधुशाला मुझे ॥

मोहिनी एस

S. MOHINI II B. A. (Economic)

“॥ धन्यवाद को धन्यवाद ॥”

है शब्द कोष में शब्द मिला, यह सबसे आला धन्यवाद ।
है धन्य व्यक्ति वह जिसने है यह शब्द निकाला धन्यवाद ॥
सच कहती हूँ सब से देते, यदि शब्द न होता धन्यवाद ।
जो पाते वह भी खो देते, यदि शब्द न होता धन्यवाद ॥
है बड़े भाग्य से शब्द यह, प्राप्त हुआ है ‘धन्यवाद’
देखा सारी दुनिया में है, यह हृदय विजेता धन्यवाद ।

कोई अच्छा व्यवहार करे, तुम देना उसको धन्यवाद
 यदि गुण को कोई प्यार करे, तुम देना उसको धन्यवाद ॥
 यदि तुम्हे किसी से दान मिले, तुम देना उसको धन्यवाद
 यदि तुम्हें किसी से मान मिले, तुम देना उसको धन्यवाद ।
 यदि तुम्हें किसी से ज्ञान मिले, तुम देना उसको धन्यवाद
 यदि तुम्हे किसी से स्थान मिले, तुम देना उसको धन्यवाद ॥
 देखा तो उर्दू भाषा में, शुकिया हो गया धन्यवाद
 अंग्रेजी में भी शब्द, 'thanks' हो गया धन्यवाद ।
 इसे सभ्य जगत के जीवन का, है एक नमूना धन्यवाद
 यदि लेना चाहो धन्यवाद, तुम देना देना धन्यवाद ॥
 यो वाद बहुत हैं दुनिया में, पर निर्विवाद है धन्यवाद ।
 सब वाद भूलते जाते हैं, पर हमें याद है धन्यवाद ।
 इस धन्यवाद के कारण ही, मिल रही दाद है धन्यवाद ।
 हम धन्यवाद को देते हैं, वस धन्यवाद ही धन्यवाद ॥

एन. मधुमति

N. MADHUMATHI I B. sc. Zoology

॥ वर्तमान खाद्य समस्या ॥

पुराने ज़माने मे हमारे देश में भी, दूध की नदियाँ बहा करती थी । यह बात सच है ,
 क्यों कि एक ज़माने मे भारत सोने की चिडिया कहलाता था । यह सब इसीलिए क्यों कि कृषक वर्ग
 जी जान लगाकर परिश्रम करते थे । खेती विधिपूर्वक की जाती थी, जिसमें पशुओं का एक महत्वपूर्ण
 स्थान था । हमारे देश की नब्बे फीसदी जनता खेती बाडी में लगी हुई थी । किसान बड़ी मेहनत
 से खेती की देख-भाल करते थे, और ज़्यादा फसल लेने की कोशिश करते थे । पुराने समय में
 अमीर और गरीबों में भेद इतना प्रकट नहीं था, क्योंकि अमीर ज़मीनदार और मालिक मजदूरों और
 किसानों से दया और सहानुभूति रखते थे और उदार-हस्त उन्हें अन्न वस्त्र बांटते थे । उस समय मे

जनसंख्या भी सीमित थी, और जो अन्न पैदा होता था, उससे उनका काम आराम से चलता था। सादा जीवन ही उनका आदर्श था। इसलिये विलास के साधनों का उपयोग कम था। और देश में सुख और शांति फैली हुई थी।

परन्तु द्वितीय महायुद्ध में भारत की हालत बहुत नाजुक हो गयी थी। हमारे देश में धन, तथा अन्न सब चीजों की कमी हुई। चारों ओर बेईमानी तथा गद्दारी होने लगी। लोग एक दूसरे का गला काटने लगे। लोभी व्यापारी अन्न की कमी हो जाने के कारण मन माने दामों में बेचने लगे। इसके ऊपर लाखों शरणार्थियों की आगमन हुआ और कई कारणों से देश की आबादी बढ़ती बढ़ती चली गयी। हर चीज में तंगी हो जाने के कारण लोग कई खतरनाक बीमारियों के पजों में फस गये। बर्मा और पाकिस्तान से जो हमारी खाद्य समस्या हल हो जाती थी। वह युद्ध के बाद कट गयी। वर्तमान खेती की दयनीय दशा तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खेती न करने की वजह से तकलीफें दुगनी हो गयीं। भारतीय पारिवारिक विभाजन के कारण ज़मीन का भी विभाजन होता था। इस कारण ज़मीन छोटे-छोटे हिस्सों में बंटती जाती थी। और किसान की आर्थिक दशा गिरती रही। यह ज़मीन आर्थिक दृष्टि से किसानों को लाभदायक न थी। अभी सरकार ने इस समस्या को दूर करने के लिए चकवन्दी कानून बनाया। इन्हीं सब कारणों से स्वाद्य समस्या उत्पन्न हुई और बढ़ती रही।

हम विद्यार्थियों को, जो कल के नागरिक बनने वाले हैं, सांचना चाहिए कि इस बड़ी समस्या को किस तरह से दूर किया जाए और देश को फिर से उसी तरह ऊपर कर ले ताकि वह फिर से एक बार सोने की चिड़िया कहलाने लगे। सबसे पहले विद्यार्थियों को किसान एव उनके बच्चों को कृषि की उत्तम शिक्षा देनी चाहिए। ताकि वे खेती की दयनीय अवस्था में परिवर्तन ला सकें उन्हें यह भी विश्वास दिलाना चाहिए कि अगर खेती को वैज्ञानिक रूप दिया जाए तो यह समस्या जल्दी ही दूर हो जाएगी। आच्छे यंत्र, बीज, खाद, पशु को अपनाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि करने में सफल हो सकता है। बेकार और ऊसर भूमि में अच्छी खाद डालकर खेती के योग्य बनाने की कोशिश करनी चाहिए। जन संख्य पर काबू पाना ही हमारा सबसे मुख्य कार्य होना चाहिए क्योंकि यही सबसे बड़ी समस्या है जिससे अन्न की कमी होती है। सरकार के जनसंख्या-नियन्त्रण-विभाग

को सरल मार्गों का प्रचार भारत की अपढ़ जनता में करना चाहिए हमें उन्हें यह भी विश्वास दिलाना चाहिए कि देश की आबादी बढ़ने से देश का ही नहीं बल्कि उनका भी उसमें नुकसान है। जन-संख्या कम होने पर खतरनाक बीमारियाँ भी कम होगी। इसी तरह हमें उन लोगों को हर क्षेत्र में शिक्षित करके उन्हें मोचने की शक्ति बढ़ाकर देश की हालत हर ढंग से सुधारनी चाहिए।

जब तक मनुष्य के समक्ष अन्न की समस्या नाचती रहेगी तब तक न तो वह स्वयं उन्नति कर सकता है तथा न राष्ट्र को उन्नते में सहयोग प्रदान कर सकता है। अतः व्यक्ति तथा राष्ट्र की उन्नते के लिए परमावश्यक है कि खाद्य समस्या को हल किया जाए क्यों कि इसके कारण जीवन दूभर एवं विपद्-ग्रस्त हो गया है।

नीरा जी.

Neera G. I B.A. (Sociology)

॥ कालिदासस्य अभिमतं दैवम् ॥

यदा पुनः वयं संस्कृतसाहित्यं प्रति चर्चां कर्तुं आरभामहे तदा सर्वप्रथमतया अस्माकं बुद्धिपथं कविसार्वभौपः कालिदासः एव अवतरति। अस्य च कवेः अभिमतं दैवतं किं इति विचिकित्सा सहृदयानां प्रियावहास्यादिति तर्क्यामि।

आपाततः विचार्यमाणे कवेरस्य सर्वास्वपि देवतासु निरतिशया भक्तिः इत्येव कथयितुं शक्यम्। तथा हि यदा कुमारसंभवे द्वितीये सर्गे ब्रह्मणः स्तुतिं करोति तदा ब्रह्मभक्त एव दरीदृश्यते। एवं रघुवंशे दशमे सर्गे यदाऽयं विष्णुं स्तौति तदा विष्णोः परमभक्तं पश्यामः। मेघसंदेशे “तत्रस्कन्दं नियतवसति” इति अस्य श्लोकस्य समीक्षणे स्कन्दभक्तः प्रतिभाति।

वस्तुतः किं वाऽस्य अभीष्ट दैवतं इति विमर्शं क्रियमाणे भगवान् शङ्कर एव इति बहुभिः कारणैः वक्तुं शक्यते। रघुवंशे प्रथमश्लोके पार्वतीपरमेश्वरौ एव वन्दते। कुमारसंभवे पुनः वस्तु निर्देशात्मना भगवतः श्वशुरस्य हिमालयस्यैव वर्णनं करोति। शाकुन्तले, विक्रमोर्वशीये तथा मालविकाग्निमित्रे च नान्दीश्लोकेषु साक्षान्महेश्वरमेव स्तौति। अपि च ईश्वर-

शब्दः महेश्वरशब्दः च साक्षात् त्रिलोचनमेव निर्दिशतः इति मुक्तकण्ठं वदति । तथाहि रघुवंशे तृतीये सर्गे—“हरिर्यथैकः पुरुषोत्तमः स्मृतः महेश्वरः व्यम्बक एव नापरः” इति । एवं कुमारसंभवे सप्तमे सर्गे—“शब्दमीश्वर इत्युच्चैः सार्धचन्द्रं विभर्तियः” इति । अन्ततः इदं च सहृदयैः चिन्तनीयं यथा शाकुन्तले अन्तिमे श्लोके—“ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः” इति ।

एवमादिभिः बहुभिः कारणैः कविसार्वभौमोऽयं न केवलं शिवभक्तः अपि तु साक्षान् महेश्वर-मेव ब्रह्मस्वरूपं मन्यते इति वक्तुं शक्यते ।

A. Shanthi I B. Sc. (Maths)

॥ दक्षिण भारत और हिन्दी ॥

हिन्दी, संसार की उन इनी-गिनी भाषाओं में से है, जो अपनी आँचल में प्राचीन संस्कृति एवं उत्कृष्ट साहित्य की अथाह जल-राशि को समेटे हुए है । यह अत्यन्त संकोच की बात है कि ऐसी विख्यात भाषा की, जिसकी बहुत विदेशी भी प्रशंसा करने मात्र पर न रहकर, अध्ययन करवे में भी रुचि लेते हैं, देश के भीतर ही भारी अवहेलना हो रही है ॥

हिन्दी भारत के अधिकांश प्रदेशों में भली-भाँति बोली जाने वाली एकमात्र भाषा है । देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली, इस भाषा का प्रादुर्भाव संस्कृत से हुआ । शुद्ध हिन्दी में संस्कृत शब्दों का आधिक्य होने के कारण, वह अत्यन्त कर्णाभिराम लगती है । अन्तरप्रदेशीय भावनाओं, उद्देश्यों, सम्प्रदायों एवं उसूलों का आदान प्रदान हिन्दी में ही भली-भाँति हो सकती है । हमारे साहित्य, संस्कृति एवं धर्म की उत्तम कृतियों की रचना हिन्दी में ही हुई है । इसलिए इस विशाल राष्ट्र के विविध रंग-रूप, प्रथाओं एवं विचारों में दाले सौकडों लोगों को एक सूत्र में पिरोने का एकमात्र साधन, हिन्दी भाषा का अध्ययन अनिवार्य बनाना है ॥

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय सरकार ने जब भाषानुकूल प्रान्तों का विभाजन किया तो उन्हें एक कटु तथ्य का आभास हुआ । प्रान्तीय सरकार अपनी मातृभाषाओं को प्रार्थमिकता देने लगी । भाषा के नाम पर प्रान्तों में पारस्परिक सम्बन्ध कुंठित हो गए और वे परस्पर वैर भाव से

ग्रस्त हो गए। दक्षिण भारत में तो जनता ने शास्त्र उठा लिए और विशेषकर तमिलनाडु के लोग हिन्दी को एक शत्रु की नज़र से देखने लगे। इसका प्रधान कारण तो यही था कि संस्कृतवाहुल्य हिन्दी, द्राविड़ भाषा, तमिल से अत्यधिक भिन्न होने के कारण उन्हें अत्यन्त कठिन लगी। इससे भी बढ़कर उनके मन में इस उत्तरभारतीय भाषा के प्रति निरादर एवं वैर की भावना थी ॥

भाषा के, और वह भी राष्ट्र भाषा के विरुद्ध रचे आन्दोलन का जैसा अनुम उदाहरण तमिलनाडु में प्राप्त है। वैसा शायद ही संसार के किसी और भाग में प्राप्त हो। केन्द्रीय सरकार ने जब सभी प्रान्तों में, बलपूर्वक हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बना दिया तब विद्रोह और क्रोध की चिंगारियाँ भड़क उठी। मानव के विवेक पर प्रबल पशुत्व ने पर्दा डाल दिया। भाषा के पीछे जान माल का भारी विनाश हुआ। ऐसी तुच्छ बात के लिए आन्दोलन रचकर, लोगों ने अपनी अपारिपक्व मनस्थिति का ही परिचय दिया। इस विद्रोह एवं विनाश को भड़काने का कारण कुछ अंश तक केन्द्रीय सरकार भी है इतनी निर्दयता और शीघ्रता से हिन्दी को अहिन्दी भाषी दक्षिणभारतीयों पर मढ़ने में उन्होंने भीषणा त्रुटि की। मनुष्य की प्रवृत्ति ही कुछ ऐसी अद्भुत है कि जो कुछ जबदस्ती से उस पर मढ़ दिया जाता है उसे वह कभी सहृदयता से नहीं अपनाता। कुछ ऐसी ही भावना का तीव्र स्रोत, हमने कुछ ही वर्षों पूर्व अपनी आँखों से देखा। मूर्खता ने तथ्य एवं वास्तविकता पर पर्दा डाल दिया। विशेषकर तमिलनाडु के युवकों ने पूर्ण कण्ठ से हिन्दी-प्रसार के विरुद्ध आन्दोलन रचे। फलस्वरूप सरकारी स्कूलों में हिन्दी का एक ऐच्छिक भाषा के रूप में अध्ययन, बन्द किया गया।

परन्तु अब आगमें पानी फेरने की चेष्टा में केन्द्रीय सरकार, अपनी कृति पर पश्चातापस्वरूप, हिन्दी-प्रसार के लिए अन्य सुलभ एवं सकल तरीके अपना रही है। वह धीरे-धीरे, विद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिन्दी को कुछ-कुछ अंशों में सम्मिलित कर रही है।

केन्द्रीय विद्यालयों में तो हिन्दी भी एक इष्ट विषय के रूप में पढाई जाती है। अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों को हिन्दी में पचास प्रतिशत या अधिक प्राप्त होने पर, केन्द्रीय सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। हिन्दी भाषा का अध्ययन करने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं। हिन्दी का अध्ययन अब सरकार जनता पर बसपूर्वक न मढ़कर, उसे प्रशंसात्मक दृष्टि से प्रोत्साहित कर रही है। अब लगभग सभी सरकारी सूचना का संदेश में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। अब दक्षिण भारतीय लोगों को भी हिन्दी की आवश्यकता एवं अनिवार्यता का

आभास होने लगा है। 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' जैसी कुछ संस्थाएँ, भारत के इस भाग में हिन्दी का प्रचार करने में व्यस्त है। परन्तु अब भी तमिलनाडु के लोग हिन्दी को हार्दिक रूप से अपना पाए हैं। वे अब भी वास्तविकता एवं मिथ्य की मन्द क्षितिज में जकड़े हुए हैं। अपनी रुढिगना विचारों एवं सिद्धान्तों को जब तक वे न त्याग दें तब तक राष्ट्र की उन्नति में वे अधिक योग न दे सकेंगे ॥

यह सर्वमान्य तथ्य है कि तमिलनाडु के तमिल भाषी निवासी, हिन्दी सीखने में कठिनाई का आभास जरूर करेंगे क्यों कि तमिल भाषा हमारे राष्ट्र की अन्य भाषाओं के विपरीत, हिन्दी से बहुत अधिक भिन्न है, परन्तु असाध्य एवं कठिन को साध्य एवं सरल बनाने में संतृप्ति है और इस सिद्धि के लिए परिश्रम और रुचि अत्यावश्यक है। कुछ नेतालोग अंग्रेजी की ही दुम पकड़े उसका गुणगान गाए मुए हैं। अंग्रेजी के समक्ष तो वे हिन्दी को तुच्छ एवं मूल्यहीन समझते हैं। ये अल्पकालिन सिंहासनधारी अपने प्रभावोत्पादक भाषणों द्वारा लोगों के हृदय में विष भरके उनकी राष्ट्रीयता को शिथिल बनाने में तल्लीन हैं। इसमें इनकी तो स्वार्थसिद्धि हो जाती है परन्तु अज्ञानी लोग अपने ही राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास एवं साहित्य का उचित मूल्यांकन करने से रंजित रह जाते हैं।

हम जब तक अंग्रेजों के अधीन रहे तब तक इमें विवश होकर अंग्रेजी की दुम पकड़नी पडी। आज, स्वतन्त्रता के लगभग २६ वर्ष के बाद भी हम अंग्रेजी को ही प्रार्थमिकता दिए हुए हैं। क्या यह संकोच की बात नहीं कि परतन्त्रता की घोटक-अंग्रेजी, को अपनी राष्ट्र भाषा से भी अधिक महत्व दें ? कुछ लोगों का यह तर्क रहेगा कि विज्ञान और उसके अनेक विभाजनों का अध्ययन केवल अंग्रेजी में ही भली-भाँति हो सकता है और कई वैज्ञानिक शब्दों का हिन्दी में अनुवाद करना नामु-मकिन है ? क्या ये वाक्पटु लोगों की यह धारणा है कि सोवियत संघ, जर्मन गणराज्य, चीन, जपान जैसे समृद्ध राष्ट्रों ने अंग्रेजी के बल पर ही उन्नति की है ? क्या वे हमारी तरह अपने राष्ट्र को द्वितीय स्थान प्रदान करते हैं। एक वे हैं जो अपनी राष्ट्र भाषा के बलपर औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं साहित्यिक विकास की चरम सीमा का अतिक्रमण कर रहे हैं और एक हम भी हैं जो अपनी संकुचित मनोवृत्ति एवं थोथे गौरव के कारण किसी विदेशी भाषा को जीवन का आधार बनाए किर रहे हैं। जब तक हममे से प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी का सामान्य अध्ययन तक न कर ले तब तक हमें स्वयं को भारतीय कहलासे का कोई अधिकार नहीं।

CHERES LECTRICES,

Tout comme l'année dernière, nous avons pensé vous rejouer par ce petit journal, et donner à nos écrivains la chance d'employer leurs talents littéraires.

Un grand merci à toutes celles qui ont contribué par leurs vers charmants ou par leurs compositions amusantes et instructives à remplir ces pages de cette langue si belle que nous désirons toutes apprendre de notre mieux.

Si vous n'avez pas encore essayé de composer quelques lignes pour notre journal, ces pages vous stimuleront...

LES AMIS

"L'amitié est une chose belle mais rare," nous dit-on. Qu'est-ce donc que l'amitié? C'est une tendresse, une affection, un attachement. Tous, sans exception, nous aimons avoir des amis. On éprouve même quelquefois une certaine fierté quand on a plusieurs amis. Mais il faut aussi savoir distinguer entre un camarade et un ami. Un camarade est un compagnon, mais un ami est non seulement un compagnon mais aussi quelqu'un qui nous aime. Nous avons tous un ou plusieurs amis; nous passons des moments inoubliables et merveilleux en leur compagnie. Mais à vrai dire, nous aimons tous avoir des amis parfaits. Nous exigeons trop de nos amis. Alors peut-on parler "d'amitié" si nous ne pardonnons pas les petits défauts de nos amis?

Personne n'est parfait ici-bas. Chacun de nous a des qualités aussi bien que des défauts. Alors comment peut-on vouloir

des amis parfaits? Voici un exemple. J'ai une amie très aimable, très gentille. On s'entend comme deux larrons en foire. On passe des moments palpitants ensemble. Le dimanche elle vient passer la journée chez moi ou bien c'est moi qui vais chez elle. On va en classe ensemble et on en revient ensemble. "Vous êtes inséparables!" nous dit-on. Mais est-ce à dire que nous sommes parfaites? Non, malheureusement. La jalousie est un sentiment que beaucoup réussissent à dissimuler, mais mon amie ne peut jamais cacher la sienne. Gare! si je suis la première en un sujet ou si j'ai une note supérieure à la sienne. Elle boude pendant deux ou trois jours, me parle peu, me répond par des monosyllabes. Ce n'est pas à cause de ces défauts que nous devons cesser d'être amis. Non, loin de là, au contraire essayons de nous rappeler la célèbre maxime: "Quand mon ami est borgne, je le regarde de profil."

CHITRA, I B.A. Soc.

RIONS LIN PELI

Le petit Auguste alla un jour avec son pere visiter le champ de ble. Il observa que certains epis se tenaient droits tandis que d'autres etaient lourdement inclines. Il dit a son pere: "Quel dommage que ces epis soient si courbes! Je prefere ceux qui se tiennent droits." Le pere prit deux epis et les roula entre ses doigts. Il dit: "Regarde; cet epis qui releve la tete si fierement est presque vide. Au contraire l'autre qui est si courbe est plein du meilleur ble."

Nous observons la meme chose parmi les hommes.

Un avare est alle au marche et a

achete de belles pommes. Il les a range dans son armoire et tous les jours ne mangeait que celles qui commençaient a se gater.

Mais il avait un fils qui aimait les pommes. Un jour celui-ci avec son camarade ont decouvert le tresor de l'avare, et vous pouvez vous imaginer combien de pommes ils ont mange.

Le vieil avare etait tres fache, mais son fils lui a dit: —"Vous ne mangez que les pommes gatees. Nous n'avons pas touche celles-la. Nous avons mange les belles pommes et nous avons laisse les votres."

R. VASANTHI, I B.Sc., Zoo.

'L' Autobiographie D'une Boite A Ordures

Avant de commencer a vous raconter mon histoire, je m'introduirai. Au coin de la Rue de Paix de ce village, vous me trouverez debout, isolee et desolee. Je m'appelle 'Boite a Ordures', mais quel que soit mon nom, cela ne fait rien. Le fait est que vous pouvez me trouver au coin de cette rue desolee et sans amis.

Ici je suis debout jour apres jour, regardant les personnes qui passent; c'est mon seul divertissement. Mais mon histoire triste commence a six heures du matin. Oh! Je redoute cette heure du jour.

Il est six heures maintenant. Je peux voir les gens venir vers moi. Les voila. La premiere femme, enleve mon couvercle et met toutes especes d'ordures en moi. Comme ces gens sont cruels! Ils n'ont pas de consideration pour moi. La deuxieme personne vient et met beaucoup de choses

aigues. Oh! ca me fait souffrir. Les pleurs tombent sur mes joues et les mouillent, mais ces monstres ne les voient pas. Ils sont contents seulement apres que je suis pleine. Ils s'en vont, ces sots-la, apres m'avoir torturee.

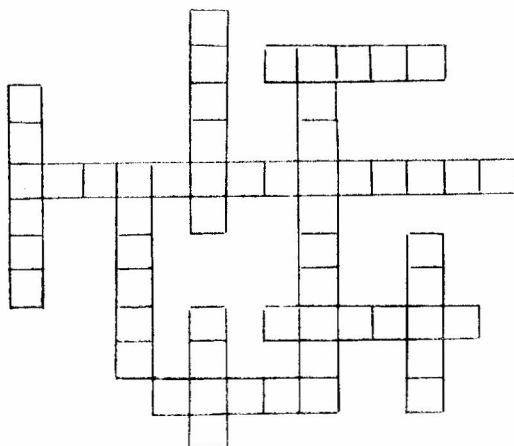
Oh! Oh! Voici les autres monstres les chiens et les chats. Ils viennent laper les ordures. Ils ne savent pas qu'ils me mouillent. Eh! C'est terrible. Mais grace a eux, je suis propre maintenant.

Tout de meme je suis desolee de nouveau. Je n'ai pas d'amis... aucun ami. Mais ces deux personnes qui passent... Qu'est-ce qu'ils disent? Oh! Ils parlent de moi. Ah! Je crois que je vais aller dans une autre localite. Quelle chance! Mais j'espere que le monde sera plus aimable la... du moins la!

A. MALINI, I B.A. Econ.

MOTS CROISES

Voici un exercice pour vous degourdir le cerveau.....Tentez votre chance.
Nous avons de beaux prix pour les premieres qui trouveront les reponses.
Adressez-vous a Sabita Monteiro, II B.Sc. Mat.



Les phrases ci-dessous vous permettront de trouver dix mots a placer dans la grille de mots croises.

1. Je ne peux rien vous montrer, je ne peux rien vous dire: c'est un.....
2. Cet espion arrive a savoir beaucoup de choses sans se faire remarquer. Il est vraiment tres a.....
3. Prendre des choses qui ne sont pas a vous, c'est.....
4. Si vous achetez une moto, vous voulez bien sur celle qui vient de sortir, c'est- a-dire le dernier.....
5. L'espion a donne beaucoup de...: la vitesse, la force d'une nouvelle voiture et meme sa date de sortie.
6. On va toujours plus vite, plus confortablement, plus loin grace a de nouvelles.....
7. Renault est la plus grande.....de voitures francaises.
8. Elle parle beaucoup d'elle-meme; elle est tres.....
9. Le sixieme mois de l'annee.
- 10; Il a marche depuis des heures; il a les.....tous confies!



Si.....

Si un homme parle trop, il est causeur.

Si un homme parle peu, il est reserve.

Si un homme depense trop, il est
depensier.

Si un homme depense peu, il est avare.

S'il progresse trop, il est pervers.

S'il traîne derriere, il est traîneur.

S'il insiste trop, il est obstine.

S'il insiste peu, il est inconstant.

S'il est accommodant, il se fait baisser.

S'il reste rigide, il est fier.

Si.....

R. VASANTHI, I B.Sc., Zoo.

Le Service D'autobus A Madras

La plupart des habitants de Madras vont en autobus, mais tout de meme, le service d'autobus est vraiment miserable. Les autobus sont vieux et marchent trop lentement ou trop vite. Ils ne sont jamais a l'heure. On attend et attend sous le soleil du midi, mais l'autobus n'arrive pas. D'autres fois les autobus arrivent trois ou quatre a la fois. C'est tres irritant parce que tout depend de la chance. Apres une longue heure d'attente un autobus arrive. Il est plein de gens qui sont tassés ensemble comme des sardines dans une boite. Il est impossible de le prendre et on ne peut rien faire sauf attendre un autre autobus.

Souvent l'autobus est en panne au

milieu de la route et vous etes perdu. Dans l'autobus il y aura certainement des dames avec de grands paniers, qui vous bousculent, et des hommes qui, en essayant de descendre de l'autobus, placent leurs pieds sur vos pieds. Parfois vous etes force de revenir s'il est trop tard. Les personnes qui n'ont pas quelque autre moyen de transport n'ont pas de choix, et ils doivent accepter l'autobus juste comme il est. Si vous ne pouvez pas l'accepter, alors marchez! Mais attention!

Quand vous marchez dans la rue, si vous entendez un grand fracas, n'ayez pas peur! C'est seulement un conducteur d'autobus changeant l'engrenage!

N. JYOTSNA, P.U. 3

மனத்துக்கண் மாசின்மை

மனமென்னும் தோணி பற்றி மதியென்னும் கோலை ஊன்றி, மதமெனும் பாறைகளுக்கிடையே பிறவி என்னும் பெருங்கடலுள் செல்லும் முடிவற்ற பயணமே மனித வாழ்க்கையாகும். எனவே மனமாகிய தோணி பழுதில்லாமல் இருத்தலே வாழ்க்கைப் பயணம் இனிதே நடைபெற வழியாவது அழுக்காறு, அவா, வெகுளி இவற்றால் அழுத்தப்பட்ட மனம், மாயையாகிய பெருங்கடலில் காகிதக் கப்பலாக கலங்குகிறது. அன்பாலும், அறத்தாலும், ஈகையாலும் நிரம்பிய உள்ளமோ நல் வாழ்வாகிய தெளித்த கடற் பரப்பின் மேல் திண்ணமிகு ஓடமென மிதக்கின்றது. எனவே; அன்பே தகளியாக, ஆர்வமே நெய்யாக கொண்டு, உள்ளத்து இருளைப்போக்கி உண்மை ஒளி பரவும் வழியை இங்கு காண்போம்.

ஆசையே உள்ளத்தில் மாசு படியச் செய்வனவாய் உள்ளவற்றுள் முதன்மையானது ஆகும். “ஆசை படப் பட ஆய் வரும் துன்பங்கள்; ஆசை விட விட ஆனந்தமே” என்பது திரு மூலர் வாக்கு ஆசையாகிய நச்சு மரத்திற்கு ஆணி வேர் பொருளேயாகும். பொருட் செல்வத்தின் மேல் உள்ள ஆசையே பிறகு மண்ணாசைக்கும் பொண்ணாசைக்கும் காரணமாய் அமைகின்றது. பலவகையான இன்னல்களுக்கும் இவ்வாறு காரணமாய் அமைவதால் நம் முன்னோர் பொருட்செல்வத்தை வெறுக்கை என்றே குறித்தனர். மேலும் மேலும் பொன்னும் பொருளும் பெற வேண்டும் என்னும் எண்ண முடையவன் எண்ணில் செல்வம் பெற்றிருந்தாலும் வறியவனாகவே கருதப்படுவான். இதை, “செல்வம் என்பது சிந்தையின் நிறைவே; அல்கா நல் குரவு அவா எனப்படும்” என்றார் குமரகுருபரர். தடைப் படுத்துவதால் நீரின்

வேகம் அதிகமாவது போலவே, ஆசையும் அடக்க அடக்க அதிகமாவது. எனவே அது அழிக்கப் பட வேண்டுவதே அன்றி ஒடுக்கப்பட வேண்டியது அன்று. “ஆசையை அறுமின்; ஈசனோடாயினும் ஆசையை அறுமின். என்று திருமந்திரம் உரைப்பதும் அதனாலேயே ஆகும்.

எனவே, காண்பன அனைத்தையும் தனதாக்கிக் கொள்ளல் வேண்டும் என்றும் நச்சுப் பயிரை உள்ளமாம் நல்ல வயலில் வளரச் செய்வதான ஆசையாகிய வித்தை அகற்றுதல் மன மாசை நீக்குதற்கு ஒரு வழியாகும்.

இனி உள்ளத்தைக் கள்ள முடைய தாய்ச் செய்வது வெகுளியும் ஆகும், கோபத்தால் தன் நாவடக்கத்தை இழந்து நங்கை நல்லாளாகிய சீதை இலக்குவனை நோக்கிக் கூறிய கடுசொற்களே பின்னர் அவளைப் பிரிவுத் தீயாகச் சுட்ட பிரிவுத் தீக்குப் பொறியாயிற்று. துரியோதனது அறிவுக் கண்ணின் முன்னால் விழுந்த அகங்காரத்தால் உண்டான கோபத்திரை அவனது குலத்தின் அழிவுக்கே காரணமாயிற்று. சினமென்னும் சேர்ந்தாரைக் கொல்லி என்றே பொய்யில் புலவர் குறிக்கின்றார். கடித்துக் கரும்பினைக் கண் தகர நூறி இடித்து நீர் கொளினும் இன்மைத்தே ஆகும் தன்மைபோல கொன்றன்ன இன்னு செய்தார் மாட்டும் கோபம் கொள்ளாத தன்மையே மனத் தூய்மைக்கு மாரக்கமாக அமைவது. உள்ளியதெல்லாம் உடனெய்துவதான தெய்வத் தன்மையை, “தன்னரிய திருமேனி சிதைப் புண்டு தவிப்பெய்தி இன்னல் பல உற்ற போதிலும், இன்னதென அறிகில்லார் தாம் செய்வது; இவர் பிழையை மன்னியும்” என அருட் கனிவாய் மலர்த் தருளிய

தாலேயே பெற்றார் அருள் வள்ளல் ஏசு நாதர்.

காமமும் குரோதமும் ஆகிய இவ்வுட்பகைகளே அன்றி பிறர் மாட்டுக் கொள்வதான புறப்பகையும் மனத்தில் மாசு படியச் செய்வதே ஆகும். பகையும் போரும் இல்லாத நாட்டில் வாழும் மக்கள் மனமே மாசற்ற தன்மை உடைதாய் இருக்கும்.

கலங்குபகை அல்லாத குறும்பல்லூர் நாடாகச் சோழ நாட்டைப்பற்றி பட்டினப் பாளையும் எய்யென எழுபகை எங்கும் இல்லாத தன்மை உடையதாக கோசல நாட்டைப் பற்றிக் கம்பனது இராமாவதாரமும் உரைக்கின்றன. “எந்நாளும் பெருமகிழ்ச்சி அங்கே! எவ்வகைப் போரும் கவலையும் இல்லை” எனத்தான் கற்பனையில் கண்ட பாரதத்திரு நாட்டைப் பாடுகின்றார் பாட்டுக்கொரு புலவர்.

உள்ளக் கண்ணாடியில், காமமும், குரோதமும், வன்மமும் ஆகியவை மாசு படியச் செய்யும் தூசெனின் அவற்றைத் துடைத்து மெருகேற்றி அதில் அறம் பிரதிபலிக்கச் செய்வனவாய் அமைவன அன்பும், ஈகையும், வாய்மையும் ஆகிய அருங் குணங்கள். துணி வெளுக்க சாணையுண்டு; அது போலவே மனம் வெளுக்கவும் ஓர் வழி உண்டு. அதுவே அன்பு வழி: அன்பின் வழி பிறப்பதான அருள் வழி. அன்பேனும் பொன் விலங்கால் அனைவரையும் தம்பால் பிணைத்தவர், அதிகாரமெனும் இரும்பு விலங்கால் அகிலமனைத்தையும் தன் ஆளுகைக்குக் கீழ்க் கொண்டவரைவிட 'வலியவர் ஆவர். இரகு குலத் தோன்றல் தனக்குரிய ஆட்சியை விடுத்து வனத்துறை ஏகியது தந்தையின் அதிகாரத்தில் கொண்ட அச்சத்தால் அல்ல; அவரது அன்பின் பிரதிபலிப்பால்; தன் விறல் மிகு கலைக்கு ஆதாரமான பெரு விரலையே குரு காணிக் கையாக ஏகலைவன் ஈந்ததும் அவர் பால் கொண்ட அச்சத்தால் அல்ல. அன்பின் மிகுதியால்; இராமன் நாடிழந்து காடு போந்தால் என்ன? ஏ க லை வ ன் தன்

கண்ணோ போன்ற கலையிழந்து அல்ல லுற்றாலும் என்ன.

உலகம் உள்ளவும் இவ்வன்புத் தெய்வங்களின் புகழ் தங்கும் அல்லவா? வாய்மையும் மன மாசை நீக்கும் வழிகளில் ஒன்றாகும். புறத்தூய்மை நீரானமையும் அகத்தூய்மை வாய்மையால் காணப்படும்” என்றது தமிழ் மறை. இருள் திரையைத் தன் ஒளிக் கிரணங்களாகிய வாட்களால் கிழித்துக் கொண்டு ஆதவன் வெளிப்படுதல் போலவே, உலக வாழ்வெனும் நாடக மேடையில் அசத்தியத்தால் போடப்பட்ட மூடு திரையும், விலக்கப்படும். அங்குச் சத்திய ஜோதியின் ஆனந்த நடனம் நிறைவேறும். இந்த தம்பிக்கையிலேபே “தருமத்தின் வாழ்வதனைச் சூது கவ்வும்; தரும் மறுபடி வெல்லும்” என அருச்சுனன் வாய்மொழியாகத் தம் பாடலில் உரைக்கின்றார் பாரதி. இதனையே நம் முன்னோர் “சத்திய மேவ ஜயதே” என்றனர். சோதனைக்கு மேல் சோதனை; வேதனையே வாழ்க்கை என்ற நிலை வந்த போதும், கொண்டது விடாக் கொள்கையராக, தம் வாழ்வையே சத்தியத்தின் சோதனையாக நடத்திக் காட்டியதாலேயே காந்தியடிகள் “மகாத்மா” வாகப் போற்றப்படுகின்றார். எண்ணச் சுழல்கள் நிரம்பிய உள்ள ஓடையின், மாசு போக்கும் படிக மாக விளங்குவது வாய்மையே.

உள்ளத்தின் தன்மையே நம் ஒவ்வொரு சொல்லிலும் செயலிலும் பிரதிபலிப்பது. உலகமாகிய அரங்கில் ஆண்டவன் என்னும் பொம்மலாட்டக் காரனால் ஆட்டுவிக்கப்படும் பொம்மைகளே நாம்! நம்மையும் அவனையும் பிணைப்பதோ நம் மனமாகிய கயிறு! எனவே உள்ளம் பழுதின்றி இருந்தாலே உலக வாழ்வாகிய நாடகத்தில் நமது பங்கைக் குறைவின்றி நிறைவேற்ற முடியும். கையும் காலும் தூக்கத் தூக்கும் ஆடிப்பாவை போலவே, எண்ணங்களின் கட்டளைப்படியே அமையும் நமது வாழ்வும், உள்ளம் மாசின்றி அமைந்தாலே நன்கு நடைபெறமுடியும். உள்ளம் அவாவும்

வெகுளியும் ஆகிய மாசு படிந்து குழம்பிய
குட்டை போல இருந்தால் அன்பும்
அருளும் ஆகிய நல்லறங்கள் அதில் பிரதி
பலிக்க முடியாது. அதனாலேயே

“மனத்துக் கண் மாசிலன் ஆதல்
அனைத்தறன்
ஆகுல நீர பிற” என்றார் வள்ளுவர்.

எனவே காமமும் குரோதமும் ஆகிய பாசி
களும் தூசிகளும் நீங்கி, அன்பும் அருளும்
ஆகிய அழகு மலர்கள் மலர்ந்து மணம்
வீசி, அறம் பிரதிபலிக்கும் அழகு மிகு
ஓடையாக நம் உள்ளங்களை அமைத்துக்
கொள்வோமாக.

R. ராதா

இள அறிவியல் (வேதியல்)
இரண்டாமாண்டு.



தோட்டம்

தோட்டத்து மரத்தில் கிள்ளை ஒன்று
தொத்தித் தொத்தியே பறந்து சென்று
ஒவ்வொரு பழமாய்க் கொத்தித் தின்று
கீசு கீசென்று கத்தியே சிறகடிக்குதட.

தோட்டத்துப் பூக்களில் வண்டு பல
தேனைத் தேடித்தேடியே சிறகடிக்க
அரும்புகள் பல இதழ் விரிக்க
அழகாய்ப் பனித்துளி பல சிதறுதட

தோட்டத்துப் பசுமையில் அணில் ஒன்று
தேடித் தேடியே கண்ட பழமொன்றை
உருட்டி உருட்டி ஓடி விளையாடியே
உண்டு கொரித்துச் சிந்தி மகிழுதட

தோட்டத்தையே உலகமெனக் கொண்டு
தேடிக் கிடைக்கும் உணவை உண்டு
பாடி மகிழும் பல உயிர் கண்டு
நிறைவுடன் உலகில் நாம் வாழ்வோமடி

கற்பகம்

முதலாண்டு இளம் அறிவியல்

தாமரைத் தண்டு

இளங்காலை நேரத்தின் இனிய தென்றல் காற்று, உடலைச் சிலிர்த்து வைத்தது. உள்ளிருந்து வந்த 'சௌந்தர்யலஹரியோ' கைதேர்ந்த ஒவியன் கைப்பட்ட வண்ணத்துளிகளாய் இதயத்தை மீட்டும் உதயராகமாய், தனக்கே உரிய சௌந்தர்யத்துடன் உள்ளத்தைச் சிலிர்த்து வைத்தது. இதயப்பூமெள்ள மெள்ள இதழவிழ்த்துக் கொண்டது. எண்ணப்பூ மனக்கூண்டினுள்ளே சிறகு விரித்துச் சடசடத்துக் கொண்டது. தென்றலுடன் இழைந்து வரும் சந்தனத்தின் சுந்தமாய், இந்தச் சுலோகங்களின் ஒவியோடு அவள் நினைவும் இழைந்து வந்து இதயத்தோடு ஒட்டி உறவாடிச் சில சிந்தனைப் பனிச் சிதறல்களைத் தெளித்துச் சென்றது.

இளம்பருவத்திலே, இனிய நினைவுகள் மெல்லிய கம்பியில் முத்து முத்தாய்க் கோர்த்து நிற்கும் மழைத்துளிகளாய் வரிசையிட, ஒன்றுதிரிந்தபின் மற்றொன்று அதன் இடத்தை நிரப்ப, வரிசையான எண்ணங்கள் விமரிசை செய்யும் வண்ணக் கோலம். வண்ண வண்ணக் கோலங்கள்; எண்ணக் குவியல்கள். குவித்து வைத்த மலர்களாய், ஒன்று தன் நிறத்தால் கண்ணை இமையாது மெய்யம்மறந்திருக்கச் செய்யும்; ஒன்று மெல்ல மெல்லச் சுந்தம் பரப்பிக் கண்மூடி மோனத்திலே இலயிக்கச் செய்யும், மற்றொன்றோ, இரண்டையுமே வென்று, ஒளிர்ந்தும், சிரித்தும், மெல்ல இதழவிழ்ந்தும், குவியலில் அடியிலிருந்து எட்டிப் பார்க்கும். எண்ணங்களின் பூப்பின்னல்கள் இடைவிடாமல் செய்யும் சுந்தரக் கோலம். இத்தனை கோலங்களிலும் துளிக் களங்கமும் இல்லை, அத்தனையும் படிக்கக் கற்கள்; அவற்றில் ஆடம்பரம் இல்லை, மனத்தை மயக்கும் உல்லாசம் இல்லை, ஆசைகளும் அபிலாஷைகளும் இருந்தாலும், திருநாளில், வாயிலோரங்களில் இடப்படும் மாக்கோலமும் செம் மண்ணுமாக. பூஜையறையில் ஒளிரும்

குத்துவிளக்கின் சுடராக ஒரு தனித்தன்மை, உவமை கூறமுடியாத தூய்மை.

இந்தத் தூய்மையையும், ஒருவனுக்கு ஒப்புவிக்க அவளை, குத்துவிளக்கின் முத்துச் சுடராக, வீணையின் இனிய நாதமாக, இலக்கணமாய் நின்ற அவளை, இலக்கியமாக, அவளே ஓர் இலக்கியமாகுமாறு ஒருவனது கைத்தலம் பற்றச் செய்தனர் பெற்றோர். மனங்கவரும் மணம்பரப்பும் மறோஞ்சிதமாக அவள் இருக்கவில்லை; இலேசாக, மிக இலேசாக மணம் எழுப்பும் தாமரைத் தண்டாக அவள் இருந்தாள், தனது அன்பின் சீதளத்தில், பிறரையும் குளிரச் செய்தாள், தானும் குளிர்ந்தாள். எரிமலையாகக் குழம்பிக் கொதித்துப் பிறர் நின்றபோதும், தன்னைக் கொண்டவனே நின்றபோதும், புரியாது, அறியாது, சொற்கள் பல பிதற்றிச் சிதறிய போதும், சோகத்தின் மோனமாய், மோனத்தின் சோகமாய் அவள் தனக்குள்ளே, தன் பொறுமைக்குள்ளே நின்றாள்; குமைந்து போனாள்.

மாறி மாறி வரும் பருவகாலங்களாய் அவள் வாழ்க்கையில் முகாரியும், ஸ்ரீராகமும் இழைந்து இழைந்து ஒலித்தன. சிறுமை கண்டு குமைந்து நின்றபோதும், உயர்வு கண்டு மகிழ்வு கொண்டபோதும், அவள் தாமரையிலேத் தண்ணீராக இருக்க வில்லை; தாமரைத் தண்டாக அதனது னுள்ளே மூழ்கித் தன்னைப் பறிகொடுத்தாள்: தன்னைப் பலி கொடுத்தாள்.

பெருமழைக்குப் பின் பிறந்து சுகானுபவம் தரும் இளவெயிலாக, அவள் வாழ்வில் மீண்டும் வசந்தம் வந்தது. நான்கு குழந்தைகளுக்கு அன்னையாக அவள். அவளிடம் இப்போதும் அதே தாமரைத் தண்டுக் குளிர்ச்சி தனக்குள்ளே சோகங்களை வெற்றிடங்களாக அடக்கிக் கொண்டிருந்தாலும், அவளிடம் எப்போதும் ஒரு தன்மை.

குழந்தைகளைத் தழுவியும், தட்டிக் கொடுத்தும் அவள் வளர்த்த முறையே தனி. காட்டு மரத்தின்மீது படரும் பூங்கொடியாகக் குழந்தைகள் எதற்கும் அவளைத்தான் சுற்றிச் சுற்றிச் சார்ந்து கொள்வார்கள். காற்றிலே மிதந்து வரும் மெல்லிய சுகந்தமாக, அவளது நினைவு தான் அவர்களுக்கு எப்போதும் காலையிலே வளைக்கரங்கள் குலுங்க, குத்துவிளக்குச் சூடராக முகம் ஒளிர அவள் ஓடியாடி இந்த வயதிலும் காரியமாற்றுவதைப் பார்க்கும் போதெல்லாம், அவர்களுக்கு மலையின் மேலிருக்கும் அழகிய பூமரத்தை அடிவாரத்திலிருந்து தாம் அண்ணாந்து பார்க்கும் எண்ணம் வரும். அந்த நினைவிலே ஆழ்ந்து நிற்கும்போது, தோள்மேல் கைபோட்டு நிற்கும் தோழவின் தழுவலைப் போல் அவளது குரல் அவர்களைக் கனவுலகிலிருந்து இவ்வுலகிற்கு மீட்கும். அவள் தன் பெண்களிடம் பழகும் முறையில், காதிலே இரகசியமாய்க் கிசுகிசுக்கும் தென்றலைப்போல் ஓர் அலாதியான இனிமை. முகூர்த்த நாளிலே மிதந்து வரும் நாதஸ்வர ஓசையாக உள்ளத்தை நிறைவிக்கும் தண்மை. நெருப்பின் கங்கு நுனியாகக் கற்பின் சிறல் கரைத்து வைத்த ஆலத்தியாகப் புனிதத்தின் செறிவு. வாட வாட

மணக்கும் மகிழும்பூவாக அவள் வாழ்க்கை நினைக்க நினைக்க, வாழ வாழ மணக்கிறது.

மீண்டும், மீண்டும் காலச் சக்கரம் சுழல்கிறது. அருகேயே இருந்து, குற்றாலத்துச் சாரலாய்ச் சிலிர்ப்பளித்து, இன்ப மளித்து, அன்பெனும் அமுதளித்து இவற்றிற்கு எல்லாம் மேலாக இளங்காலையின் பூபாளமாக இனிய இரவின் நீலாம் பரியாகத் தண்ணென்று, தனித் தன்மை தோன்ற தண்மையளித்த அவள், பெற்ற செல்வங்களைப் பிரிந்த நிலையிலும், அவளது தண்மை மாறவில்லை. வண்ணச் சிதறல்களாய்க் கொத்துக் கொத்தாய் மலர்ந்து தொங்கும் கொன்றைச் சரங்களைப் போல் அவள் மனத்தில் மீண்டும் நினைவுகள் மலரத் தொடங்கி விட்டன. மனமெனும் மரத்தடியில், உதிர்ந்து கொண்டேயிருக்கும் பவழமல்லிகை மலர்களாய் எண்ணங்கள் பட்டுப்பாய் விரிக்கத் தொடங்கிவிட்டன, ஆம்; அவள் நினைவுகளில் வாழ ஆரம்பித்து விட்டாள். எண்ண மலர் பூத்த வண்ணத் தடாகத்திலே தாமரைத் தண்டாக மீண்டும் அவள் வாழ ஆரம்பித்துவிட்டாள்.

(மேற்கண்டது உரைநடையில் எவ்வகையைச் சார்ந்ததென்று தீர்ப்பளிப்பது வாசகர் பொறுப்பு)

நா. மைதிலி

இள அறிவியல் (விலங்கியல்) முதலாண்டு